ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक
वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

विदेशों में लोक नाच भंगड़े के बदलते परिप्रेक्ष अधीन प्रवासी पंजाबी, विशेष रूप में स्त्रियों का योगदान

डॉ. इन्दिरा बाली
सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, नृत्य विभाग,
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

सिमरजोत कौर
रिसर्च स्कालर, नृत्य विभाग, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला
असिस्टेंट प्रोफैसर, डांस विभाग,
गुरू नानक गर्लज़ कालेज, लुधियाना

सार-संक्षेप

भंगड़ा पंजाब की लोक नृत्य शैली की पहचान है। भारत में सम्भवत: लोक संगीत पर आधारित जितने भी कार्यक्रम होते हैं उनमें भंगड़ा नृत्य शैली को आवश्यक रूप से सम्मिलित किया जाता है। बैसाखी को नव वर्ष का आगमन माना जाता है। बैसाख आते-आते पंजाब के हर तरफ भंगड़े की उपस्थिति देखी जा सकती है। पंजाब के इतिहास पद दृष्टि डालें तो उनमें एक मूल तत्त्व जोश की प्रधानता दिखेगी। वही जोश और उन्माद पंजाब के भंगड़े में देखा जा सकता है। पंजाब में प्रवासी होने की प्रवृत्ति इधर कुछ वर्षों से अधिक ही बढ़ी है। यह प्रवृत्ति गुजराती में भी देखी जा सकती है लेकिन पंजाब में कुछ अधिक ही है। और वे विश्व के प्रत्येक देशों में मिल जाते हैं। पंजाबी मूल रूप से बहुत मेहनती होते हैं। मनोरंजन के लिए लोक संगीत से वे हमेशा जुड़े रहते हैं। विदेश में रहते कई कलाकारों ने लोक संगीत या पंजाबी संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक संस्थाओं की स्थापना की। लोक संगीत के प्रचार-प्रसार में महिलाओं ने सदैव योगदान दिया है। भंगड़ा नृत्य शैली ने आज महिलाएँ भी भागीदार बन रही हैं। वे भी विदेश की धरती पर भंगड़े द्वारा अपनी उपस्थिति का आभास करा रही हैं। इस शोध पत्र में भंगड़ा नृत्य शैली के अन्तर्गत महिलाओं के योगदान की सराहना की गई है। मूल रूप से तीन ऐसी संस्थाओं का चयन किया गया है जो अमेरिका, इंगलैण्ड और कनाडा में स्थित संस्थाओं द्वारा महिलाओं की भंगड़ा प्रस्तुति को प्रस्तुत करती हैं। जिसके द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया है कि स्त्रियाँ भी भंगड़ा जैसी मर्दाना शैली में किसी से कम नहीं है।

शोध-पत्र

''सिर्फ धरती ही नहीं घूमती, इस धरती में रहने वाले व्यक्ति भी घूमते रहते हैं।''[1] इन अवधारणाओं के चक्र में पता नहीं कितने समुदाय के लोगों ने एक जगह से दूसरी जगह का भ्रमण किया है। इस भ्रमण के बीच ही सभ्यता और संस्कृति के उदय और अस्त का सिलसिला जारी रहता है।

पक्षियों के प्रवास के बारे में हम कई लेख और किताबों में पढ़ते हैं कि किस तरह यह छोटे-छोटे पंखो वाले पक्षी हज़ारों मील की उड़ान भरकर, वातावरण के अनुकूल इलाकों में पहुँच जाते हैं। पक्षियों के भांति ही कुछ मनुष्य समुदायों में भी प्रवास करने की प्रवृति होती है, जिसमें से एक हैं पंजाबी समुदाय। ''पंजाबी समुदाय मूल रूप से प्रवासी पक्षी हैं।''[2] प्रवास करना पंजाबी सभ्यता की मूल पहचान है। पंजाबी सभ्यता की अमीर विरासत को पंजाबी अपने साथ विदेशों में भी लेकर जाते रहे हैं। जिस कारण इस की महक, इस का हुस्न, इसकी बेशुमार माया ने सारे संसार में अपनी एक अलग पहचान बना ली है।

पंजाबी प्रवासियों के कारण जहाँ आर्थिक तौर पर पंजाब के रहन-सहन में क्रांति आई है, वही उनके योगदान से पंजाब की कला और संस्कृति को अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्रदान करने में भी कामयाबी मिली है। विदेशों में पंजाबी सभ्यता को उत्साह उस समय मिलना शुरू हुआ होगा जब वहाँ के पंजाबी व्यक्ति समूह को अपने स्वभाव के अनुसार किसी मनोरंजक साधनों की कमी महसूस हुई होगी। ''क्योंकि कोई भी व्यक्ति किसी मनोरंजक साधनों के बगैर नहीं रह सकता।''[3] उन्हें सारा दिन कड़ी मेहनत करने के बाद मनोरंजन के साधन ही आत्मा की खुराक के लिए एकमात्र सहायक रही होगी जिसके कारण अपनी इस सभ्याचारक मनोरंजन की भूख को तृप्त करने के लिए प्रवासी पंजाबियों ने रंगारंग प्रोग्राम पेश करने वाली प्रोफैशनल टोलियों को आमंत्रित करना आरम्भ कर दिया। प्रवासी पंजाबी जो रोज़गार की तलाश में वहाँ जाकर रहने लगे, अपने काम धंधों से भरी व्यस्त ज़िंदगी में अपनी सभ्यता के साथ जुड़ने के लिए कोई ना कोई साधन अपना ही लेते हैं, जिनमें से एक है, 'पंजाबी लोक नृत्य भंगड़ा'।

पंजाब के लोक-नृत्यों का महत्त्व सिर्फ इस तथ्य पर ही नहीं है कि यह पंजाबियों के मनोरंजन के साथ जुड़े हुए हैं, बल्कि इस बात में भी है कि यह पंजाबियों की सामूहिक सृजनात्मक प्रतिभा का बे-बाक प्रकटीकरण है।[4]

नृत्य एक ऐसा माध्यम है जिसके साथ व्यक्ति अपने मन के भावों को प्रकट करता है। इन लोक नृत्यों के जरिए प्रवासी पंजाबी भी अपने मन के उत्साह, उमंग और जोश के भावों को नृत्य अदाओं के साथ बाँधकर ऐसे शब्दों को जाना है जिसको वह अपने रोज़ के कार्यों के समय शायद बोलने में असमर्थ होते हैं। जिस कारण विदेशों में पंजाबी लोक-नृत्य, विशेष रूप से भंगड़ा पंजाबियों का पहचान-चिह्न बनकर उभर रहा है।

''पंजाब की ग्रामीण लोक परम्परा में से चला आ रहा भंगड़ा जब पढ़े-लिखे लोगों के शहरी दायरों और विदेशों में पहुँचा तो इसकी पूर्ण काया-कल्प हो गई।''[5] यह परिवर्तन सिर्फ मेले के खुले स्थान से आधुनिक स्टेज तक या खुले भंगड़े से एक योजनाबद्ध पेशकारी तक का ही नहीं, बल्कि यहाँ भंगड़ा किसानी संस्कारों वाले नृत्य से बदलकर शहरों की मध्यवर्गीय श्रेणी और विदेशी उच्च श्रेणी भावनाओं के साथ जुड़ता है।

''भारत के लोक नृत्यों में भंगड़ा एक ऐसा नाच है जो अपने तत्व और पेशकारी में सबसे ज्यादा आधुनिक है।''[6]

भंगड़ा लोक नृत्य परिवर्तनशील होने के कारण पिछले तीन दशक से भिन्न-भिन्न प्रकार से नाचा जाने लग पड़ा है, जिस कारण भंगड़ा दिन प्रतिदिन विदेशों में बहुत बड़े स्तर पर प्रचलित हो रहा है। इसके प्रचलित होने के कारणों में से एक कारण यह है कि जो विदेशों में जन्मीं पंजाब की नई पीढ़ी है, उसको अपने संस्कार के साथ जुड़ने का एक मनोरंजक साधन प्राप्त है, जिसके ज़रिए भंगड़े को सीखने और नाचने वाले लोगों का रूझान बढ़ता जा रहा है। इसके कारण विदेशों में भंगड़ा ना सिर्फ मर्दों का बल्कि स्त्रियों का भी नृत्य बनता जा रहा है।

आज के समय में वैश्वीकरण के प्रभाव अधीन जहाँ औरतें मर्दों के साथ कंधे से कंधा जोड़ कर हर एक क्षेत्र में बराबरी के साथ काम कर रही हैं, वहाँ उनके लिए भंगड़ा करना कोई हैरानी या एतराज़ की बात नहीं, बल्कि समय की मांग को समझते हुए इसे पूरा सकारात्मक योगदान मिलना चाहिए। भंगड़ा पेश करने वाले कलाकार चाहे मर्द हों या स्त्रियां, उनका मुख्य उद्देश्य यही है कि पंजाबी सभ्याचार को भंगड़े के ज़रिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध किया जाए। डा. गुरनाम सिंह के अनुसार ''लड़कियाँ, लड़कों का सांझा भंगड़ा अर्थात् सम्मिलित भंगड़ा, तैयार करने की काफी उदाहरणें हमारे सामने आती हैं और यह प्रयोग दर्शकों की काफी प्रोत्साहन भी लूट लेते हैं।''[7]

आज के समय में विदेशों में बसे पंजाबियों को उनके लोक नृत्य भंगड़े के कारण हर समुदाय, हर देश का व्यक्ति जानता ही नहीं बल्कि खुद भी भंगड़े को सीखने और पेश करने की इच्छा प्रकट करता है।

इस समय स्त्रियों का भंगड़ा समुह और मर्दो और स्त्रियों का सामूहिक भंगड़ा समूह अलग-अलग देशों में, कई संस्थाओं में बहुत उच्च कोटि का काम करने में सार्थक हैं। विदेश में भंगड़े की महिला कलाकारों के योगदान को निम्नलिखित संस्थाओं ने बहुत प्रयास किए हैं।

1. भंगड़ा एम्पायर

अमरीका में भंगड़ा ऐम्पायर की स्थापना 2006 में कैलीफोर्निया में वहां के सानफ्रांसिस्को एरिया की डांस टीम से हुई जिसमें ज्यादातर वहाँ के अंडर-ग्रैजुएट, ग्रैजुएट और ग्रैजुएशन करने वाले विद्यार्थियों द्वारा हुआ, जो पढ़ाई के साथ-साथ भंगड़ा और पंजाबी संस्कृति को आगे बढ़ा रहे हैं। इस टीम ने चार सालों में ही 16 अवार्ड भंगड़े में जीत कर भंगड़े को पूरे अमेरिका में एक अलग पहचान दी है।

24 नवंबर 2009 को इस भंगड़ा टीम ने अमेरिका के प्रैज़ीडैंट बराक ओबामा के व्हाइट-हाऊस में मर्दों और स्त्रियों का सामूहिक भंगड़ा पेश कर एक मिसाल कायम की। इस कार्यक्रम में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह को रात के खाने पर बुलाया गया था।

इस तरह अमेरिका के टैलेंट शो ''अमेरिका गौट टैलेंट'' में इसी संस्था की टीम ने पेशकारी देकर अंतर्राष्ट्रीय टी.वी. चैनल पर भी अपनी धाक जमा ली, जिसके कारण विदेशों में इस लोक नृत्य के प्रति लोगों का रूझान और बढ़ गया है।[8]

2. जुगनू भंगड़ा ग्रुप

इंग्लैंड में जुगनू भंगड़ा ग्रुप भी बहुत बड़े दर्जे पर भंगड़ा और पंजाबी संस्कृति को विश्व प्रसिद्ध करने में योगदान दे रहा है। जिसकी नींव डा. सुरजीत सिंह रंधावा ने 1970 में रखी थी। उस समय सिर्फ मर्दों का ही भंगड़ा पेश किया जाता था परन्तु समय के साथ-साथ बदलाव की रूचि रखते हुए इस ग्रुप ने स्त्रियों की पंजाबी सभ्याचार के साथ जुड़ने की बढ़ती मांग को देखते हुए 2006 में स्त्रियों की भंगड़ा टीम तैयार की और इस परम्परा को आज के समय में जगदेव सिंह विरदी पूरी लगन और मेहनत के साथ इंग्लैंड में आगे बढ़ा रहे हैं।

3. यू.बी.सी.भंगड़ा क्लब कैनेडा

यू.बी.सी. भंगड़ा क्लब कैनेडा की शुरूआत 1994 में यू.बी.सी. के पंजाबी विद्यार्थियों द्वारा हुई जो अपने पंजाबी विरसे के साथ जुड़े रहना चाहते थे। इस क्लब में प्रवासी विद्यार्थी और विदेशों में पले-बड़े पंजाबी विद्यार्थी शामिल हैं।

कहा जाता है कि ''यू.बी.सी. की स्त्रियों की टीम संसार की पहली भंगड़ा टीम रही है जिसने सन् 2000 में मर्दों के भंगड़े को स्त्रियाँ होकर बहुत खूबसूरती के साथ पेश किया था। इस ग्रुप ने कई रिकार्ड तोड़े और पूरी दुनियां में यह सिद्ध कर दिया कि लोक-नृत्य भंगड़ा करने के लिए मर्दों या स्त्रियों का होना ज़रूरी नहीं बल्कि इसके लिए मन में जोश और उत्साह होना आवश्यक है। स्त्रियों की इस भंगड़ा टीम ने 2010 में वैनकूवर में हुई ओलंपिक खेलों में याद रखने योग्य पेशकारी देकर सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया था।''[9]

सारांश

उपरोक्त चर्चा से यह कहा जा सकता है कि विदेशों में बसे पंजाबियों द्वारा अपनी युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति के साथ जोड़े रखने के कारण और पंजाबी लोक-नृत्यों को विदेशों के नृत्यों के बराबर उनकी पेशकारी की भावना ने इन संस्थाओं की स्थापना की। यह पंजाबी समुदाय ही है जो चाहे किसी भी देश मे प्रवास कर जाए, परन्तु अपने निरन्तर यत्नों द्वारा विदेशों में अपनी एक अलग पहचान बना ही लेता है। यह समुदाय अच्छी तरह जानता है कि किस तरह विदेशी संस्कृति को अपनाना है और उसमें से अपने पंजाबी विरसे को किस रूप में विदेशियों के सामने रखना है।

इस शोध-पत्र में सिर्फ इंग्लैंड, अमेरिका और कैनेडा की एक-एक नृत्य संस्था के बारे में ही चर्चा हो सकी है जहां ज्यादा आबादी में पंजाबी प्रवास करते हैं परन्तु इन संस्थाओं के अलावा भंगड़े का प्रचार और प्रसार करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर और भी कई विदेशी संस्थाएं प्रयासरत हैं जिनकी वागडोर प्रवासी पंजाबियों के हाथ में है, जो स्त्री-मर्द के भेदभाव से कलाकारों को ऊपर उठाकर लोक-नृत्य भंगड़े को पूरे मन से पंजाबियों की पहचान बनाने में योगदान दे रहे हैं।

पाद-टिप्पणियाँ

1. नेहरू, जोगिन्द्र सिंह, (1998), कैनेडा में पंजाबी सभ्याचार, पृ. 23
2. दियोल, हरमंदर सिंह, कुलबीर सिंह कांग (1986), पंजाबी सभ्याचार, पृ. 169
3. नेहरू, जोगिन्द्र सिंह (1988), कैनेडा में पंजाबी सभ्याचार, पृ. 93
4. अजमेर सिंह (1997), खोज पत्रिका, पंजाबी सभ्याचार, विशेष अंक, पृ. 302
5. नाहर सिंह (1988), पंजाबी लोक नृत्य, सभ्याचार और भूमिका और सार्थकता, पृ.55
6. वही, पृ. 39
7. गुरनाम सिंह (1992), पंजाब के लोक नृत्य, पृ. 42
8. www/bhangraempire.com
9. www.alumni.ubc.ca/2011/trek/2011-spring/the-ubc-girlsz/

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नेहरू, *जुगिन्द्र सिंह कैनेडा में पंजाबी सभ्याचार,* लोकायत प्रकाशन, चंडीगढ़, 1998

नाहर सिंह, *पंजाबी लोक-नृत्य-सभ्याचारक भूमिका और सार्थकता,* लोक गीत, प्रकाशन सरहिंद, 1998

हरमंदर सिंह, *पंजाबी सभ्याचार बाबा फरीद* सहित सम्मेलन फरीदकोट

अजमेर सिंह, खोज पत्रिका, *पंजाबी सभ्याचार* विशेष अंक पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, 1997

गुरुनाम सिंह, पंजाब के लोकनृत्य, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, 1992

वैबसाईट-

1. www.google.com
2. www.bhangraempire.com
3. www.jugnu.bhangra.com
4. www.alumni.ubc.ca